



STOCK PATHSHALA
LEARN MORE, EARN MORE!

STOCK PATHSHALA

शेयर मार्केट कैसे सीखें PDF

शुरुआती लोगों के लिए आसान हिंदी गाइड: बेसिक्स, शब्दावली,
सीखने का रोडमैप और शुरुआती गलतियां।

stockpathshala.com

शैक्षणिक सामग्री। निवेश सलाह नहीं।

शेयर मार्केट क्या है?

सबसे पहले बुनियाद। इसे समझ लिया तो आगे का हर कदम आसान होगा।

किसी कंपनी के छोटे-छोटे हिस्सों को **शेयर** कहते हैं। जब आप किसी कंपनी का शेयर खरीदते हैं, तो आप उस कंपनी के एक छोटे हिस्से के मालिक बन जाते हैं।

शेयर मार्केट वह जगह है जहां ये शेयर खरीदे और बेचे जाते हैं। यह आज ऑनलाइन चलता है, यानी आप मोबाइल से भी ट्रेड कर सकते हैं।

भारत के दो बड़े एक्सचेंज

भारत में शेयरों की खरीद-बिक्री मुख्य रूप से दो एक्सचेंज पर होती है: **NSE** (नेशनल स्टॉक एक्सचेंज) और **BSE** (बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज)। दोनों बाज़ार के तय नियमों के हिसाब से चलते हैं।

बाज़ार में कौन-कौन होता है

- **खरीदने वाले:** जिन्हें लगता है कि शेयर का भाव आगे बढ़ेगा या जो लंबे समय के लिए कंपनी में हिस्सा चाहते हैं।
- **बेचने वाले:** जो मुनाफ़ा निकालना चाहते हैं, नुकसान रोकना चाहते हैं या पैसे की ज़रूरत पूरी करना चाहते हैं।
- **ब्रोकर:** वह माध्यम जिसके ज़रिए आपका ऑर्डर एक्सचेंज तक पहुंचता है।

शेयर का भाव कैसे बदलता है?

भाव **डिमांड और सप्लाई** से तय होता है। जब खरीदार ज़्यादा होते हैं, तो भाव ऊपर जाता है। जब बेचने वाले ज़्यादा होते हैं, तो भाव नीचे आता है।

कंपनी की खबरें, नतीजे, देश-दुनिया की घटनाएं और लोगों की सोच, ये सब इस डिमांड-सप्लाई को प्रभावित करते हैं।

Sensex और Nifty क्या बताते हैं?

Sensex (BSE का) और **Nifty** (NSE का) इंडेक्स हैं। हर इंडेक्स चुनी हुई बड़ी कंपनियों के शेयरों का एक समूह होता है। इनके ऊपर-नीचे जाने से बाज़ार का आम मूड समझ आता है।

एक सरल उदाहरण (काल्पनिक)

मान लीजिए एक कंपनी ने अपने शेयर बाज़ार में उतारे। कई लोगों को लगा कि कंपनी का कारोबार बढ़ेगा, इसलिए वे खरीदने लगे और भाव ऊपर गया। बाद में कंपनी की कोई बुरी खबर आई, तो कई लोग बेचने लगे और भाव नीचे आ गया। भाव बदलने की वजह वही है: खरीदार और बेचने वालों की संख्या।

शुरुआत कैसे करें?

असली पैसे लगाने से पहले ज़रूरी चीज़ें और उनका सही क्रम।

शेयर मार्केट में उतरने के लिए आपको दो खाते चाहिए: **डीमैट अकाउंट** (जहां आपके शेयर सुरक्षित रहते हैं) और **ट्रेडिंग अकाउंट** (जिससे आप ऑर्डर लगाते हैं)। दोनों को अपने **बैंक खाते** से जोड़ा जाता है।

खाता खोलते समय **KYC** करनी होती है, यानी आपकी पहचान और पते की जांच।

स्टेप-बाय-स्टेप

स्टेप	क्या करना है
1. ब्रोकर चुनें	अपनी ज़रूरत के हिसाब से एक भरोसेमंद, रजिस्टर्ड ब्रोकर चुनिए।
2. KYC पूरी करें	पहचान, पते और बैंक की जानकारी के दस्तावेज़ दीजिए।
3. अकाउंट खोलें	डीमैट और ट्रेडिंग अकाउंट एक साथ खुलते हैं।
4. बैंक लिंक करें	अपने बैंक खाते को ट्रेडिंग अकाउंट से जोड़िए।
5. छोटी शुरुआत	पहले सीखिए। फिर बहुत छोटी रकम से अभ्यास कीजिए।

SEBI भारत में शेयर बाज़ार का रेगुलेटर है। उसका काम बाज़ार के नियम बनाना और निवेशकों के हित की रक्षा करना है।

ब्रोकर चुनते समय क्या देखें

- ब्रोकर **SEBI-रजिस्टर्ड** है या नहीं।
- ऐप का इस्तेमाल आपके लिए आसान है या नहीं।
- सारे शुल्क साफ़-साफ़ लिखे हैं या नहीं।
- ग्राहक सहायता समय पर जवाब देती है या नहीं।

ऑर्डर के मुख्य प्रकार

शेयर खरीदते या बेचते समय आप कई तरह के ऑर्डर लगा सकते हैं।

ऑर्डर	मतलब
मार्केट ऑर्डर	मौजूदा भाव पर तुरंत खरीद या बिक्री। रफ़्तार तेज़ होती है, पर भाव पर आपका नियंत्रण नहीं रहता।
लिमिट ऑर्डर	आप अपना भाव खुद तय करते हैं। ऑर्डर तभी पूरा होता है जब बाज़ार उस भाव पर पहुंचे।
स्टॉप-लॉस ऑर्डर	नुकसान की एक सीमा तय करता है। भाव उस स्तर तक पहुंचे, तो पोजीशन अपने-आप बंद करने का ऑर्डर लग जाता है।

ट्रेडिंग और निवेश में फर्क

दोनों में पैसा लगता है, पर सोच और तरीका अलग होता है।

पहलू	ट्रेडिंग	निवेश
समय सीमा	छोटी अवधि: कुछ मिनट से कुछ हफ्ते	लंबी अवधि: कई साल
मकसद	भाव के उतार-चढ़ाव से कमाई	कंपनी की बढ़त के साथ पूंजी बनाना
किस पर ध्यान	चार्ट, भाव की चाल और टाइमिंग	कंपनी का कारोबार और मज़बूती
निगरानी	लगातार नज़र रखनी पड़ती है	कम समय की निगरानी काफ़ी
जोखिम	आम तौर पर ज़्यादा	कम नहीं, पर समय के साथ फैलता है
ज़रूरी अनुशासन	सख्त नियम और स्टॉप-लॉस	धैर्य और सही कंपनी का चुनाव

कोई एक तरीका सबके लिए सही नहीं है। अपने समय, लक्ष्य और जोखिम सहने की क्षमता के हिसाब से चुनिए।

ट्रेडिंग के मुख्य प्रकार

प्रकार	एक पंक्ति में
इंट्राडे	उसी दिन खरीदकर उसी दिन बेच देना। दिन के अंत तक कोई पोजीशन नहीं रखी जाती।
स्विंग ट्रेडिंग	कुछ दिनों से कुछ हफ्तों तक की चाल पकड़ना।
पोजीशनल ट्रेडिंग	हफ्तों या महीनों तक पोजीशन रखना।
ऑप्शंस ट्रेडिंग	डेरिवेटिव्स का एक प्रकार, जिसमें जोखिम ज़्यादा है और पहले अच्छी समझ ज़रूरी है।

शुरुआती लोगों के लिए सलाह जैसी बात: पहले बेसिक्स और रिस्क मैनेजमेंट सीखिए। ऑप्शंस जैसे जटिल साधन बाद में आते हैं।

बेसिक एनालिसिस

शेयर को परखने के दो मुख्य तरीके।

शेयर चुनने से पहले उसे परखा जाता है। इसके दो तरीके सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होते हैं: फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस। दोनों एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं।

फंडामेंटल एनालिसिस

इसमें कंपनी की असली ताकत देखी जाती है: कारोबार कैसा है, कमाई बढ़ रही है या नहीं, कर्ज़ कितना है और प्रबंधन कैसा है।

किसके लिए: आम तौर पर लंबे समय के निवेश के लिए।

सवाल जो पूछा जाता है: क्या यह कंपनी अच्छी है?

टेक्निकल एनालिसिस

इसमें शेयर के पिछले भाव और वॉल्यूम के चार्ट पढ़कर आगे की चाल का अंदाज़ा लगाया जाता है।

किसके लिए: आम तौर पर ट्रेडिंग और एंट्री-एग्जिट की टाइमिंग के लिए।

सवाल जो पूछा जाता है: अभी खरीदने या बेचने का सही समय क्या है?

टेक्निकल एनालिसिस के बुनियादी औज़ार

औज़ार	एक पंक्ति में
चार्ट	समय के साथ शेयर के भाव का चित्र, जिससे चाल एक नज़र में दिखती है।
कैंडलस्टिक	एक तय समय में शुरुआती, आखिरी, सबसे ऊंचा और सबसे नीचा भाव एक आकृति में दिखाती है।
सपोर्ट	वह भाव-स्तर जहां से गिरावट अक्सर रुकती दिखती है।
रेज़िस्टेंस	वह भाव-स्तर जहां से तेज़ी अक्सर रुकती दिखती है।
वॉल्यूम	एक तय समय में कितने शेयरों की खरीद-बिक्री हुई। इससे चाल की मज़बूती का अंदाज़ा मिलता है।

शुरुआत में सारे औज़ार एक साथ मत सीखिए। एक-दो चुनिए, उन्हें चार्ट पर बार-बार पहचानने की प्रैक्टिस कीजिए।

कोई भी एनालिसिस भविष्य की गारंटी नहीं देती। यह सिर्फ फैसले में मदद करती है।

जरूरी शब्दावली

शुरुआत में बार-बार सुनने वाले 20 शब्द।

शब्द	मतलब
शेयर (Share)	किसी कंपनी की मालिकी का एक छोटा हिस्सा।
IPO	कंपनी का पहली बार आम जनता को शेयर बेचना।
डिविडेंड (Dividend)	कंपनी के मुनाफ़े का वह हिस्सा जो वह शेयरधारकों में बांट सकती है।
बुल मार्केट (Bull market)	जब बाज़ार में आम तौर पर तेज़ी का माहौल हो।
बेयर मार्केट (Bear market)	जब बाज़ार में आम तौर पर गिरावट का माहौल हो।
वॉल्यूम (Volume)	किसी समय में खरीदे-बेचे गए शेयरों की संख्या।
मार्केट कैप (Market cap)	कंपनी के सभी शेयरों की कुल बाज़ार कीमत।
इंडेक्स (Index)	चुने हुए शेयरों का समूह, जो बाज़ार की चाल दिखाता है।
ऑर्डर (Order)	खरीदने या बेचने का आपका निर्देश।
स्टॉप-लॉस (Stop-loss)	नुकसान सीमित रखने के लिए पहले से तय किया गया निकास भाव।
लॉट (Lot)	डेरिवेटिव्स में एक कॉन्ट्रैक्ट के शेयरों की तय मात्रा।
एक्सपायरी (Expiry)	वह तारीख जब डेरिवेटिव कॉन्ट्रैक्ट खत्म होता है।
प्रीमियम (Premium)	ऑप्शन खरीदने के लिए चुकाई जाने वाली कीमत।
मार्जिन (Margin)	ट्रेड के लिए ब्रोकर के पास रखी जाने वाली ज़रूरी रकम।
स्क्वेयर-ऑफ (Square-off)	खुली पोजीशन को उलटा सौदा करके बंद करना।
डीमैट (Demat)	वह खाता जिसमें आपके शेयर डिजिटल रूप में रहते हैं।
ब्रोकर (Broker)	वह मध्यस्थ जो आपका ऑर्डर एक्सचेंज तक पहुंचाता है।
सर्किट (Circuit)	एक दिन में भाव कितना ऊपर या नीचे जा सकता है, उसकी तय सीमा।
लिक्विडिटी (Liquidity)	शेयर को आसानी से और सही भाव पर खरीदने-बेचने की सुविधा।
पोर्टफोलियो / होल्डिंग	आपके पास रखे सारे शेयर और निवेश, यानी आपकी होल्डिंग का पूरा समूह।

रिस्क मैनेजमेंट

बाज़ार में टिके रहने का सबसे ज़रूरी हुनर।

शुरुआत में सवाल यह नहीं होना चाहिए कि कितना कमाएंगे। सवाल यह होना चाहिए कि **एक ट्रेड में कितना गंवाना मंजूर है।**

- **स्टॉप-लॉस:** एंट्री से पहले ही तय कर लीजिए कि कहां निकलेंगे।
- **पोजीशन साइज़िंग:** स्टॉप-लॉस की दूरी के हिसाब से तय कीजिए कि कितने शेयर खरीदने हैं।
- **रिस्क-रिवॉर्ड:** जितना जोखिम लें, संभावित फ़ायदा उससे ज़्यादा रखिए।

काल्पनिक उदाहरण

मान लीजिए आपकी ट्रेडिंग पूंजी ₹1,00,000 है और आप एक ट्रेड में पूंजी का 1% जोखिम लेना चाहते हैं, यानी ₹1,000। शेयर ₹100 पर खरीदना है और स्टॉप-लॉस ₹95 पर रखा है। यानी जोखिम ₹5 प्रति शेयर।

शेयरों की संख्या = $₹1,000 \div ₹5 = 200$ शेयर।

अगर आपका टारगेट ₹110 है, तो संभावित फ़ायदा ₹10 प्रति शेयर है। यानी जोखिम ₹5 के मुकाबले फ़ायदा ₹10, जिसे **1:2 रिस्क-रिवॉर्ड** कहते हैं।

यह सिर्फ समझाने के लिए काल्पनिक गणित है, चार्जस और टैक्स से पहले। इसका मतलब यह नहीं कि टारगेट ज़रूर मिलेगा।

एक ट्रेड में कितना रिस्क?

कोई जादुई संख्या नहीं है, पर शुरुआत में पूंजी का बहुत छोटा हिस्सा ही दांव पर लगाइए, ताकि कुछ ट्रेड गलत होने पर भी आप खेल में बने रहें।

शुरुआती लोगों की 8 आम गलतियां

- ☐ बिना सीखे, सिर्फ किसी के कहने पर ट्रेड करना।
- ☐ स्टॉप-लॉस के बिना ट्रेड करना।
- ☐ एक ही शेयर में सारी पूंजी लगा देना।
- ☐ नुकसान की भरपाई के लिए गुस्से में तुरंत और ट्रेड लेना।
- ☐ उधार लिए या ज़रूरी खर्चों के पैसे से ट्रेड करना।
- ☐ बिना समझे ऑप्शंस में कूद जाना।
- ☐ बिना जर्नल रखे ट्रेड करना, इसलिए गलतियां दोहराना।
- ☐ जल्दी अमीर बनने की उम्मीद रखना।

30 दिन का सीखने का रोडमैप

रोज़ सिर्फ 30 से 45 मिनट। नियमित रहना गति से ज़्यादा ज़रूरी है।

सप्ताह	क्या सीखें	अभ्यास
सप्ताह 1	शेयर मार्केट की बुनियाद: शेयर, एक्सचेंज, इंडेक्स, SEBI, ब्रोकर।	रोज़ एक विषय पढ़िए। Nifty का चार्ट देखने की आदत डालिए।
सप्ताह 2	डीमैट और ट्रेडिंग अकाउंट, ऑर्डर के प्रकार, शब्दावली।	ब्रोकर ऐप के डेमो या खुद के नोट्स में ऑर्डर के प्रकार समझिए।
सप्ताह 3	बेसिक एनालिसिस: फंडामेंटल, चार्ट, कैडलस्टिक, सपोर्ट-रेज़िस्टेंस।	रोज़ दो-तीन शेयरों के चार्ट पर सपोर्ट-रेज़िस्टेंस पहचानिए।
सप्ताह 4	रिस्क मैनेजमेंट, स्टॉप-लॉस, पोजीशन साइजिंग, ट्रेडिंग जर्नल।	पेपर ट्रेडिंग शुरू कीजिए और जर्नल भरिए।

रोज़ के 30 से 45 मिनट ऐसे बांटिए

समय	क्या करें
10 से 15 मिनट	आज का विषय पढ़िए या वीडियो देखिए।
10 से 15 मिनट	चार्ट या उदाहरण पर वही बात खुद करके देखिए।
10 से 15 मिनट	नोट्स बनाइए। जो समझ न आया, उसे अलग लिखिए।

इन 30 दिनों के बाद

अगर 30 दिन की यह आदत बन गई, तो आप बाज़ार की भाषा समझने लगेंगे। उसके बाद पेपर ट्रेडिंग को कुछ हफ्ते और चलाइए। असली पैसे तभी लगाइए जब आपके पास लिखा हुआ नियम हो, स्टॉप-लॉस की आदत हो और हारने की स्थिति के लिए मन तैयार हो। हर व्यक्ति की गति अलग होती है। यह रोडमैप एक सुझाव है, ज़रूरत हो तो इसे अपने हिसाब से खींचिए।

सीखने के तरीके और ठगी से बचाव

सही स्रोत चुनिए और धोखे से सावधान रहिए।

तरीका	फ़ायदा	कमी
ब्लॉग	मुफ्त, कभी भी पढ़ सकते हैं।	बिखरी जानकारी, क्रम खुद बनाना पड़ता है।
YouTube	आसानी से समझ आता है, मुफ्त।	स्तर और भरोसेमंद होना अलग-अलग होता है।
किताबें	गहराई और क्रम से जानकारी।	अभ्यास और सवाल-जवाब का मौका कम।
ऐप	सुविधाजनक और कहीं भी।	अक्सर खुद करना पड़ता है, कोई मार्गदर्शन नहीं।
लाइव क्लासेस	सवाल पूछ सकते हैं, सीधा मार्गदर्शन।	समय देना पड़ता है और शुल्क लग सकता है।

सबसे अच्छा नतीजा अक्सर मिले-जुले तरीके से आता है, जैसे पढ़ने के लिए ब्लॉग या किताबें और अभ्यास के लिए क्लासेस।

ठगी से बचिए

शेयर मार्केट में नए लोग ठगों का आसान निशाना बन जाते हैं। इन बातों का ध्यान रखिए।

- ☐ **रजिस्ट्रेशन जांचिए:** सलाह या सेवा देने वाले का SEBI-रजिस्टर्ड होना पहले देख लीजिए, और यह जानकारी SEBI की आधिकारिक वेबसाइट पर खुद जांचिए।
- ☐ **गारंटीड रिटर्न से दूर रहिए:** जो भी तय मुनाफ़े या “पक्की कमाई” का वादा करे, वह खतरे की घंटी है।
- ☐ **अनजान WhatsApp या Telegram टिप्स न मानें:** अनजान ग्रुप और अजनबियों की टिप्स पर पैसा मत लगाइए।
- ☐ **जल्दबाज़ी न करें:** “आज ही पैसा डालिए” जैसे दबाव में फैसला मत लीजिए।
- ☐ **निजी जानकारी बचाइए:** OTP, पासवर्ड या खाते की जानकारी किसी को मत बताइए।
- ☐ **पैसे सीधे ब्रोकर से जुड़े अपने खाते में ही रखिए,** किसी निजी व्यक्ति के खाते में कभी नहीं।

याद रखिए: अगर कोई बात ज़रूरत से ज़्यादा अच्छी लग रही है, तो रुकिए और जांचिए।

प्रेक्टिस वर्कशीट

पेपर ट्रेडिंग जर्नल। असली पैसे के बिना अभ्यास कीजिए, फिर हर हफ्ते समीक्षा।
प्रिंट कीजिए या अपनी कॉपी में उतार लीजिए। हर काल्पनिक ट्रेड के बाद एक पंक्ति भरिए।

तारीख	शेयर	खरीद / बिक्री	एंट्री	स्टॉप-लॉस	टारगेट	एग्जिट	नतीजा	सीख

साप्ताहिक समीक्षा चेकलिस्ट

- ☐ क्या हर ट्रेड में एंट्री से पहले स्टॉप-लॉस तय किया था?
- ☐ क्या मैंने अपने तय किए हुए नियम तोड़े? कहाँ और क्यों?
- ☐ क्या कोई ट्रेड जल्दबाज़ी या डर में लिया गया?
- ☐ इस हफ्ते की सबसे बड़ी गलती क्या रही और उसे कैसे दोहराने से बचूंगा/बचूंगी?
- ☐ इस हफ्ते मैंने कौन-सा नया शब्द या औज़ार सीखा?
- ☐ अगले हफ्ते का एक सुधार क्या होगा?

आगे क्या करें

पढ़ने के बाद अभ्यास, और ज़रूरत हो तो मार्गदर्शन।

इस गाइड से आपको शेयर मार्केट की बुनियाद, शब्दावली और सीखने का एक रास्ता मिल गया होगा। अब असली काम है नियमित अभ्यास।

पहले पेपर ट्रेडिंग कीजिए, जर्नल भरिए और अपनी गलतियों से सीखिए।

अगर आप किसी के साथ बैठकर सीखना चाहते हैं, तो Stock Pathshala की लाइव क्लासेस मदद कर सकती हैं। ये क्लासेस **1 से 1.5 घंटे** की होती हैं और इनमें **पर्सनलाइज़्ड मेंटरशिप** मिलती है।

कोई फिक्स्ड बैच नहीं है। हर learner के लक्ष्य, समय और स्तर के हिसाब से प्लान बनता है। क्लासेस मुनाफ़े की कोई गारंटी नहीं देती। वे सिर्फ आपको सही तरीके से सीखने में मदद करती हैं।

जानकारी के लिए: **stockpathshala.com**

इस गाइड के 5 मुख्य सबक

- शेयर किसी कंपनी का हिस्सा है, और भाव डिमांड-सप्लाई से बदलता है।
- ट्रेडिंग और निवेश अलग हैं। अपना तरीका सोच-समझकर चुनिए।
- एंट्री से पहले स्टॉप-लॉस और पोज़ीशन साइज़ तय कीजिए।
- पहले पेपर ट्रेडिंग, फिर बहुत छोटी शुरुआत।
- गारंटीड रिटर्न का वादा करने वाले से हमेशा दूर रहिए।

अस्वीकरण

यह PDF सिर्फ शिक्षा के लिए है और निवेश सलाह नहीं है। सभी उदाहरण काल्पनिक हैं और सिर्फ समझाने के लिए दिए गए हैं। किसी मुनाफ़े की गारंटी नहीं है। शेयर मार्केट में जोखिम होता है और आप अपनी पूंजी का कुछ या पूरा हिस्सा गंवा सकते हैं। नियम और प्रक्रियाएं बदलते रहते हैं, इसलिए ताज़ा जानकारी NSE, BSE, SEBI और अपने ब्रोकर से जांच लें। टैक्स के बारे में चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA) से पुष्टि कीजिए।